Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ललेश्वरी के वाक्

संकल्न एवम् अनुवाद
सरोजिनी बंगरू चौथाई (अंजली)

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

Compliments from

Virender Gurel

Lolkot., 2022

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 3722 (D)
Dated 17/10/2022

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

भूमिका

आज से लगभग तीन साल पहले 2012 में हमारा परिवार कश्मीर गया था। हम अपने गांव नागाम जोकि बडगांव जिला के चाडूरा तहसील में आता है। गांव के सारे लोग हमसे मिलने के लिए आतुर थे। चूंकि मेरा जन्म श्रीनगर में हुआ था। इसलिए मैं गांव के रहन सहन से अवगत न थी।

गांव में प्रेम-भाव अधिक होता है। सभी गांव वालों की उत्सुकता मुँह पर स्पष्ट झलक रही थी। हालांकि उन लोगों को मेरे साथ कोई जान-पहचान न थी फिर भी वह मुझ से कुशल क्षेम पूछ रहे थे। मेरे बच्चे उनके बच्चों से साथ घुल-मिल गए। उन्हीं लोगों में से एक आदमी जोकि मेरे पति के साथ बात कर रहा था, वह अपनी बातों के बीच-बीच में लल्वाक बोल रहा था। मैंने सोचा शायद वह कभी-कभार इनका उदाहरण दिया करता होगा। मगर मैंने उसे हर रोज ऐसे ही करते देखा। उसका अंदाज भी मुझे अजीब सा लगा, वह कुछ मस्ताने किस्म का आदमी लग रहा था। मेरे बच्चे भी उस आदमी से प्रभावित हुए, वह उसकी बातें रिकार्ड करने लगे।

मेरे मन में आया क्यों न मैं भी ललवाक के बारे में कुछ लिखूं। मेरे हृदय में बचपन से ही ललद्यद की तस्वीर छप चुकी थी। मैंने बचपन में ललद्यद की एक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तस्वीर देखी थी जिसके नीचे लिखा था

'शिव छुय थलय-थलय रोजान,
मोजान हयुन्द त मुसलमान,
त्रुक हा छुक त पान परजान,
सुय छय साहिबस जानी जान'।

इस वाक् को मैं बचपन से ही रटती आ रही थी। मैं चाहती हूँ कि हर कोई लल्लेश्वरी के वाकों को पढ़े, उनसे अवगत हो, इसलिए मैंने लल्लेश्वरी के मूल कश्मीरी वाकों को सरल हिन्दी में अनुवाद किया है। अलग-अलग किताबों को पढ़कर और लोगों से भी कुछ 'वाक' एकत्रित करके मैंने ललद्यद के 'वाक' लिखे हैं। इन वाकों को एकत्रित करने के लिए मैं शेख नूर-उ-दीन वली नूरानी के चारि शरीफ भी गई। मैंने सोचा शायद वहां पर नुन्द ऋषि की कुछ किताबें होंगी, मगर मुझे वहां पर कोई किताब नजर नहीं आयी। वहां पर बस रूपयों का लेन-देन जोरों पर चल रहा था। खैर मैंने अपनी यह किताब पूरी की। मैं अपनी यह किताब अपने माता-पिता को समर्पित कर रही हूँ। उन्हीं की सही शिक्षा और लालन-पालन से मैं यहां तक पहुंच पायी हूँ। वह दोनों मेरे मार्ग-दर्शक हैं। उन्हीं के आशीर्वाद से मैंने यह किताब पूरी की।

लल्लेश्वरी जिसको प्यार से लोग लल्द्यद लल आरिफा, लल मॉज, लला ओर ललयोगिश्वरी से याद करते हैं। लल्लेश्वरी का जन्म सन् (1320-1339 ई०) के

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आसपास पांदेरेठन (पुराणाधिष्ठस्थान) कश्मीर में एक ब्राहमण परिवार में हुआ था और वह सन् 1392 ई॰ तक जीवित रही। यह पहली कवियित्री थी जिनके विचार आज तक हमारे विचारों में बसे हैं। बचपन से ही ललद्यद ईश्वर प्रेम की ओर आकृष्ट हुई। इनके गुरू-स्यदबोय (स्यदश्रीकंठ) थे। जिन्होंने ललद्यद को दीक्षित किया। ललद्यद अपने परिवार में छः भाई-बहनों के बाद में थी और सात के पहले, ललद्यद ने यह बात खुद स्वीकार की है न ही उसने किसी बच्चे को जन्म दिया है।

"न प्यायस तअ न जायस
न खेयम हन्द तअ न शोंठ
शन छस पतअ तय
सतन छस ब्रोंठ'

ललद्यद का विवाह बारह (12) वर्ष की उम्र में पाम्पोर (पदमाानपुर) के पंडित सोनभट्ट से हुआ। ससुराल में इन्हें पदमावती नाम से पुकारा गया। इनकी आध्यात्मिक प्रवृति के कारण इन्हें काफी सताया गया। इनकी सास इन्हें काफी सताया करती थी, दुःख देती थी। कश्मीरी पंडित समाज में अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं जिनसे इस शैव योगिनी के सुसराल में बिताए गए दिनों का अनुमान लगाना सरल हो जाता है। कहा जाता है कि इनकी सास इनकी थाली में परोसे गए चावल के भीतर एक गोल पत्थर (जोकि छोटी ओखली के अन्दर होता है, जो कूटने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

के काम आता है) इस पत्थर से यह लगता था कि लल्लेश्वरी कितना ढेर सारे चावल खाती है। लल्लेश्वरी बिना कुछ कहे खाना समाप्त करके वह पत्थर अपनी जगह रखती थी। इस बात का पता इससे भी लगता है कि एक बार कुछ औरतों ने ललद्यद से कहा कि आज तुम्हारे घर में दावत है। लल् ने उत्तर दिया कि मुझे इस बात से फर्क नहीं पड़ता, बड़ा भेड़ मारे या छोटा मेरे नसीब में तो वही पत्थर है। किंवदन्तियों के अनुसार ललद्यद का पति मूर्ख था, उसने ललेश्वरी में आद्यात्म की आग को नहीं चेता। ऐसा लगता था कि ललेश्वरी के साथ न्याय नहीं हुआ था। लल्लेश्वरी की सास ने उसको इतने संताप, पीड़ा दी कि वह मन ही मन पिगलने लगी। लल्लेश्वरी को भरपेट खाना भी नहीं मिलता था। सास उसको बहुत ही तंग करती थी। बात-बात पर कोसती थी। कष्ट जब झेलने से बाहर हुआ तब लल्लेश्वरी ने समाज और घरवालों के विरूद्ध क्रान्ति की और घर संसार छोड़कर मीराबाई की तरह योगिनी बनकर वन-वन फिरने लगी। लोगों ने लल्लेश्वरी को लल मंच (बावरी) कहना शुरू किया। इसकी परवाह किए बिना लल्लेश्वरी ज्ञान और आध्यात्म की ओर बढ़ती गई और अपनी मन की पीड़ा और ज्ञान को लोगों तक पहुँचाने का काम वाख (वाक्यों) से किया। ऐसे वाख जो आसान भाषा में और हर एक दिल को छूने वाले होते थे। ललेश्वरी कश्मीरी पंड़ित समाज और शैव त्रिक शास्त्र

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

की महानतम विभूति है। उनके वाखों में आज भी जीवन और जगत के रहस्यों का विश्लेषण आत्मिक स्तर पर ही किया जा सकता है। उनके वाख हमारे पथ-पर्दशक है। उनके वाकों में दर्शन-शास्त्र का गाम्भीर्य विचार जगत का गहन मंथन और आत्मिक अनुभूतियों की अथाह आस्था का सागर लहरें मार रहा है। ललद्यद ने कितने वाख कहे हैं यह 700 साल बाद इस समय कहना कठिन है। लोगों की जुबान पर जो वाख चड़े वह समाज में आज कल भी कहे जाते हैं। कई लेखकों ने 200 के करीब वाख इकटठे किए और उस पर ललद्यद की छाप छोड़ गए। कई लेखकों का मानना है कि केवल 64 वाख ही ललद्यद के अभी तक पता चले हैं।

ललद्यद के "वाख" पर इस हकीकत पर बहस होना जरूरी है कि इनके बारे में उस समय के इतिहासकार मौन क्यों हैं। जौनराज जिसने बड़शाह के समय के हालात लिखे हैं वह भी ललद्यद के बारे में कुछ नहीं लिख पाए हैं। दरअसल 17वीं शताब्दी से पहले किसी ने भी ललद्यद के बारे में नहीं लिखा है। मगर ललद्यद के वजूद का सबसे बड़ा सबूत नुन्द-ऋषि का वह वाक्य है जिसमें उसने ललद्यद के बड़प्पन और उस तक पाने की तमन्ना की है। वह वाख है :-

"तस पदमान पोरचि लले
यम तिगले अमृतपथ प्योव

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सोय तान्य अवतारन कले
तिथुय वर मैं दितो दिव''

इसका हिन्दी अनुवाद है :-

पदमानपुर की ललद्यद ने रहकर अमृत के घूंट पिये, उसने फिर उस जैसा कोई न देखा। मेरे (दिव) परमेश्वर मुझे भी उस जैसी जगह पर पहुँचा दे। कश्मीर की एक और योज़िनी कवियत्री रूपाभवानी (1620-1720) ने अपनी एक कृति में ललद्यद के बारे में लिखा है -

सूदधम अत्यन्त विधाधरम
लल नाम लल परम गुरूवम्

इसका हिन्दी अनुवाद है :-

मेरी सबसे बड़ी गुरू लल्लेश्वरी है जो पवित्र है और बहुत विद्वान है। रूपाभवानी के बाद (1654 ई०) में दावूद मिशकती ने लल का उल्लेख अपनी एक किताब ''असरार-उल-अबरार'' में किया है। (1746 ई०) में मुहम्मद आजम देदमरी ने ललद्यद को अपनी एक फारसी किताब वाकात-इ-कश्मीर में 'आरिफा कामिल लल्ला' के नाम से उल्लेख किया है। एक किंवदन्ती जो कश्मीर में प्रसिद्ध है उसका उल्लेख करना जरूरी है कहते हैं कि जब नुन्द ऋषि का जन्म (1377 ई०) में हुआ तो उसने मां का दूध बड़ी कोशिशों के बाद भी नहीं पिया तो किसी ने कहा कि इस बच्चे को ललद्यद के पास ले चलो शायद उसके हाथ लगाने से यह दूध पिए। वह इस बच्चे को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लेकर ललद्यद मॉज (माँ) के पास ले गए। ललद्यद ने बच्चे को गोद में उठाया और उसके कान में कहा

''ज्यनअ मन्दछोख न त
चनअ कव छुख मन्दछान''

इसका हिन्दी अनुवाद है :-

जन्म लेने में तुझे शर्म नहीं आई अब दूध पीने में तुझे शर्म आती है। कहते हैं कि ललद्यद के स्पर्श और यह वाक्य कहने से ही इस बच्चे ने दूध पीना शुरू किया। ललद्यद अपने बारे में कहती हैं :-

साचसस न सातस प्रच्छसस न रूमस
सुमस चव में ललि पनुनाई वाख
अन्दरिम गटकार रटिथ तअ वलुम
चट्थि ति दयुत्मस तती चाख'

कहने का अर्थ यह है कि मैंने एक लम्हे के लिए भी आशा धारण नहीं की न ही मैंने पलभर का भरोसा किया, मैंने अपने ही वाख रूपी नशा पी लिया जिससे कि मैंने अज्ञान रूपी अन्धेरे को पकड़ा और पहन लिया और फिर काटके फैंक दिया। वस्तुतः ललद्यद के ''वाख'' वह अतरंग अभिलेख है जो उसकी व्यथा, कष्ट और संघर्ष की कहानी को दर्शाते हैं। ललद्यद एक ईश्वरवाद को मानती थी इसलिए उनके वाखों में केवल एक ओंकार और उसके माध्यम से शिव को पाने की लालसा थी। वह कहती थी कि शिव हर एक जगह रहने वाला, वह जीव के अन्दर भी है और बाहर भी है। उनका कहना है कि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शिव आपको केवल ओंकार के पाठ करने से मिलेगा।

'ओमुय (ॐ) आद्य त ओमुय सोरूम
ओमुय ठहरूम पनुन पान
अन्त त्रविथ न्यथई बोसुम्
तवय प्रोवुम परमसथान'

अर्थात् - ॐ ही सब का आद्य है, मैंने इसी पर विचार किया। ॐ को ही मैंने अपना आधार बनाया। इस झूठे संसार को छोड़कर मुझे सच्चाई महसूस हुई। तभी तो मैंने परम परमेश्वर के स्थान को पाया।'' ललद्यद ने जिस भाषा में अपने वाख कहे वह शुद्ध कश्मीरी है और इसमें प्राकृत भाषा का बहुत सा असर दिखाई देता है। ऐसे कई शब्द है जो आजकल की कश्मीरी भाषा में नहीं बोले जाते और न लिखे जाते हैं।

प्यार और घरेलू जिन्दगी की निराशा ने ललद्यद को संसार से विरक्त कर लिया। वह एक योगिनी बनकर और घुमक्ड़ विचारक के रूप में रहने लगी। योगिनी बनकर उसने अपने विचारों को 'वाख' कहकर व्यक्त किया। उसके उपदेशों का तात्पर्य केवल बंधन मुक्त और त्याग था। वह संतोष को अपनाने पर बल देती थी। इसी पर उसने कहा था।

ख्यन ख्यन नो कुन्ई वात्ख
न ख्यन गच्छक अहंकारी सोमय
ख्य मालि सोमय रोजख
अदअ मुचरन्य तति बरूयन तारी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

अर्थ - कहने का अर्थ यह है कि खाना खा-खा कर कही नहीं पहुँच सकता और बिना खाये अहंकारी हो जायेगा इसलिए हे मनुष्य उतना ही खा जितना कि पचा सकता है। कहने का अभिप्राय यह है कि परमात्मा तक पहुँचने का रास्ता न अति आसान, न अति कठिन, सच्चाई पर चलोगे तो तुम्हें सच में उस ईश्वर के दर्शन होंगे। ईश्वर के द्वार तुम्हारे लिए खुल जायेंगे। परमेश्वर से मिलने का उसका चिन्तन था कि इन्द्रियों को नियंत्रित करना, अभिलाशा, लालसा और अहंकार को वश में करना ही एक मात्र रास्ता है। उसने अर्थहीन संस्कारों को अनुचित ठहराया। उसने अपने विचारों को साधारण जनता तक पहुँचाने के लिए आसान व प्रचलित भाषा का प्रयोग किया। ललद्यद को हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के लोग मानते है वह सब की चहेती थी। तभी तो उसने अपने एक 'वाख' में कहा है।

''शिव छुय थलय-थलय रोजान
मो जान ह्यून्द त मुसलमान
त्रुक हय छुक त पान परजान,
सोय छय साहिबस जानि जान''

कहने का अर्थ यह है कि शिव हर स्थान पर है वह हर जगह रहता है वह हर किसी अंश में विद्यमान है। तुम क्यों हिन्दू और मुसलमान में फर्क करते हो। अगर तुम एक बुद्धिमान व्यक्ति हो तो अपने अंतर मन में झाँक कर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

देखो। वही उस ईश्वर को पाने का रास्ता है, अर्थात् कहने का अभिप्राय यह है कि वह एक ईश्वर है वह तुम्हारे हृदय में है उसको बाहर ढूँढ़ने की क्या आवश्यकता है।

सरोजिनी बंगरू चौथाई
(अंजली)
मकान नम्बर - 180
विकास नगर, सरवाल जम्मू। पिन - 180007

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ललद्यद के वाक् (मूल कश्मीरी)

ओम्ई अक्युय अच्छर पोरूम,
सुय्य हा मालि रोटुम वोन्दस मन्ज़,
सुय्यु हा मालि कनि प्यठ गरुम् चरूम्,
आसस सास त सपन्स सोन।।

अर्थ - मैंने केवल एक ही अक्षर ऊँ को पढ़ा। उसी एक अक्षर को मैंनें मन में धर लिया। वही एक अक्षर मैंने दिल रूपी पत्थर पर अच्छी तरह से तराशा। इसी प्रकार में सुहागा से सोना बनी।

शब्दार्थ- अच्छुर = अक्षर, वोन्दरस = दिल में, सास= राख, मालि = मनुष्य, कनि = पत्थर, सोन = सोना।

ओम्य छु वथ पत ओमय छु सोरुन,
ओम्ई छु उपदेश अपर ज़ान,
ओम्ई परुन ओम्ई सोंरुन,
ओम्सई सॉत छई जॉनी-ज़ान

अर्थ - ॐ ही सबकाआद्य है ॐ पर ही विचार करना चाहिए ॐ ही सच्चा उपदेश है जो अनपढ को भी रोशनी देता है एक अज्ञानी को ज्ञानवान बनाता है। ॐ ही पढ़ना है और इसी पर विचार करना है। ॐ ही हमें सच्चे ज्ञान से परिचय कराएगा।।

शब्दार्थ- सोरुन = विचार करना, अपर = अनपढ, जॉनी-ज़ान = परिचय।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ओम्य आदि त ओम्ई सोरुम्,
ओम्य ठहरुम पनुन पान,
अन्त त्रविथ न्यथई बोसुम,
तवय त्रोवुम् परमस थान

अर्थ - ॐ ही सबका आद्य है मैंने इसी का विचार किया। ॐ को ही मैंने अपना आधार बनाया। इस झूठे संसार को छोडकर मुझे सच्चाई का पता चंला। तभी तो मैंने परमेश्वर के स्थान को पाया।

शब्दार्थ - न्यथई = झूठा, परमस = परमेश्वर, थान = स्थान, जगह।

अकुई ओंकार युस नाभि धरे,
कुम्बुय ब्रह्मांडस सुम गरे,
अख सुय मन्त्र युस च्यतस करे
तस सास मन्त्र क्यॉह ज़न करे

अर्थ - एक ही ओंकार शब्द को प्राणों में घर लो। यह अक्षर इस ब्रहमांड रुपी सागर से पार करेगा।एक यही मंत्र, जो चित में रखा जाए तो उसको दुसरे हजार मन्त्र क्या करेंगे।

शब्दार्थ - नाभि = प्राण, सुम = सागर, व्यतस = चितमें, सास = हजार, गरे = पार करना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

दम दम ओंकार मन परनोवुम्,
पानय परान पानय बोजान,
सूहम पदस अंह गोलुम्,
त्यलि बोलल वॉच्स प्रकाश थान

अर्थ - हर समय मैंने ओंकार के मन्त्र का ही उच्चारन किया खुद्ध ही पढ़ती रही और खुद ही सुनती रही। सहम पद से मैने अहं को मिटा दिया। तब ही मैं लल ज्ञान मार्ग पर पहुँची।

शब्दार्थ - दम दम = हर समय, परनोवुम = उच्चारन, थान = मार्ग, बोलल = मैं लल।

दीशअ आयस दश र्दश तेलिथ,
चालिथ रोटुम शीन अदअ वाव,
शिवय डयूठम शायि शायि मीलिथ
शअ तअ त्रेह त्रटमस तअ शिवई द्रॉव

अर्थ - दस देशों को फिर कर (यात्राकरके) मैं अपने देश में आ गई। में (बर्फ) और वायु को काट कर उसमे से गुजरी। हर जगह मैंने शिव को ही पाया । छः और तीन को बन्द किया तब भी केवल शिव ही रहा।

शब्दार्थ - दीशअ = अपने देश, दश दश = दस देश, शीन = हिम, बर्फ, वाव = हवा, वायु, तेलिथ = यात्रा करके, शअ = छे, त्रेह = तीन।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

दिहचि लरि दारि बरॅ त्रोपरिम्,
प्राण चूर रोटुम तअ दयुतमस दम्,
हृदयचि कूठरि अन्दर गोन्डुम्,
ओमक्य चाबुकस तुलमस बम्

अर्थ - शरीर रुपी मकान के मैंने खिड़कियाँ और दखाजें बन्द किए। प्राण रुपी चोर को पकडा और बन्द किया। हदय की कोठरी के अन्दर बॉध कर रखा। और ॐ के चाबुक से मारा।

शब्दार्थ - लरि = मकान, दारि = खिड़कियॉ, बर = दखाजा, चूर = चोर, दिहचि = शरीर की।

दोह तारह दुनियाहस तमा मालि बोरुम्,
पतव जोनुम केन्ह नतअ क्याह,
हावसअ ललि में शास्त्र पोरुम,
पर पर क़ोरुम् पूरुम नअ जांह

अर्थ - चन्द दिन आकर मैंने इस संसार को भोगा और अन्ततः जान लिया कि यह कुछ नही है। मुझ लल ने बड़ी चाहत के साथ शास्त्र पढ़ें। मैं पढ़ती रही पढ़ती रही। लेकिन ऐसा करने से भी ईश्वर को नही पा सकी।

शब्दार्थ - दुनियाहस = संसार, हावसअ = चाहत के साथ, पोरुम = पढ़ा, पर-पर = पढ़ते-पढ़ते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

दहनिस ओबरस जायुन जाई है,
सोदंर जानिहे कडिथ वथ,
म्यनदिस रुगायस व्यदुत अन्हा,
मूडस जोनुम न परनित कथ

अर्थ - क्या यह हो सकता है कि मैं दीक्षनाया मेघ को हरा सकूँ। क्या यह हो सकता है कि मैं समुद्र के पानी को एक नाली में से निकाल सकूँ। क्या यह हो सकता है कि मैं रोगियों और कोडियों का इलाज कर सकूँ। क्या यह हो सकता है कि मैं एक मूर्ख को उपदेश दे सकूँ।

शब्दार्थ - ओबरस = बादल, मेघ, सोदुर = समुन्द्र, मूडस = मूर्ख, म्यन्दिस = कोड़ी।

दमन बसति दितो दल
दमनस दिथअ दमान खार,
शशतरस सोन गच्छि हासिल
वुनि छय सुल तअ छान्डुन यार

अर्थ - तू अपना दिल फूंकने की तरफ लगा जैसे लोहार फूंकने में फूंक भरता है। ऐसा करने से तुम लोहे के बदले सोना हासिल कर सकते हो। अभी सवेर है देर नही हुई अपने ईश्वर की तलाश कर।

शब्दार्थ - दमन = फूंक, खार = लोहार, शशतरस = लोहा, यार = ईश्वर।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

दमी ऑसस लोक्ॅट कर
दमी सपन्स जवान पूर
दमी ऑसस फेरान थोरान
दमी सपन्स दजिथ सूर।

अर्थ - एक समय मैं एक छोटी कन्या थी एक समय मैं पूरी जवान हो गई, एक समय में इधर-उधर फिरती रही। एक समय में फिर अंत में जलकर राख हुई।

शब्दार्थ - दमी = एक समय, लोक्ॅट = छोटी, दजिथ = जलना, सूर = राख।

दमी डयूंठुम नद वुहवनी,
दमी डयूठुम सुम नतअ तार
दमी डयूंठुम थर फोलवनी
दमी डयूंठुम गुल नतअ खार

अर्थ - एक समय में मैंने बहती हुई नदी देखी। एक समय में मैंने न पुल देखा न पार करने का कोई रास्ता देखा। एक समय मैंने खिलखिलाती बेल देखी जो फूलों से लदी हुई थी। एक समय मैंने न ही फूल देखा न ही कांटे देखे।

शब्दार्थ - डयूंठुम = देखना, नद = नदी, वुहवनी = बहती हुई, सुम = रास्ता, थर = बेल, गुल = फूल, खार = कांटे, फोलवनी = खिलखिलाती।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

दमी डीठम् गज दजवनी
दमी डयूंठम् दाह नतअ नार
दमी डयूंठम पांडवन हन्ज मौजी
दमी डयूंठम क्रांजी मास

अर्थ - एक समय मैंने भट्टी को जलते हुए देखा, एक समय मैंने न ही धुआं देखा, न ही आग देखी, एक समय मैंने पांडवों की माँ देखी, एक समय मैंने कुम्हार की मासी को देखा।

शब्दार्थ - गज = भट्टी, दाह = धुआं, क्राजी = कुम्हार, दजवनी = जलती हुई, नार = आग।

दमी डयूंठुम शबनम प्यवान
दमी डयूंठुम प्यवान सूर
दमी डयूंठुम अनिगटस रातस
दमी डयूंठुम दोहस नूर

अर्थ - एक समय मैंने शबनम को पड़ते देखा। एक समय मैंने कोहरा गिरते देखा। एक समय मैंने अन्धेरी रात देखी, एक समय मैंने दिन को उजाला देखा।

शब्दार्थ - सूर = कोहरा, नूर = उजाला, प्यवान = गिरना, अनिगटस = अंधेरा, दोहस = दिन को।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कर्म ज़ह कारण त्रेह कोम्बई
यव लबरव परलोकस अन्क
वोथ कोहस सूर्य मंडल चम्बुत
तवई चली मरन्यन शेन्ख।

अर्थ - कर्म दो है और कारण तीन, इन पर तू कुम्बक योग से अभयास कर। ऐसा करने से तेरा परलोक सुधर जाएगा। इसलिए उठो ओर सूर्य मंडल पर चढ़कर उससे पार करो। ऐसा करने से तुम्हारे मरने का डर तुम से दूर हो जाएगा।

शब्दार्थ - ज़ह = दो, त्रेह = तीन, शेन्ख = डर, लबरव = ढूंढेगा।

क्याह बडिकुय मोह भव सोदरस तारे
सुविथ लुहरिथ पेयि तिम् पंख
यिम वठ करनय कालअ छालदारे
कव जन कासी मरनन शेन्ख

अर्थ - तुम मोह, माया में इस संसार रूपी सागर में क्यों डूबे हो। जब तुम ने बांध तोड़ दिया तो तुम्हारे सामने अन्धेरा छा गया। अपने समय पर यम तुम को बुरी गति करके ले जाएगा। इसलिए तुम्हारे मरने का डर तुम से कौन मिटाएगा।

शब्दार्थ - भव = संसार, सोदरस = सागर, कासी = मिटाना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

चालुन छुई वुजमल तअ त्रटय
चालुन छुई मन्दन्यन गटकार
चालुन छुई पनुनपान कडुन ग्रटै
हतअ मॉलि संतोश वाति पानै

अर्थ - आकाशी बिजली का गिरना और बादलों का गर्जना बरदाशत करना है। दोपहर के समय अन्धेरा होना बरदाशत करना है। अपने आप को चक्की में पिसवाना बरदाशत करना है। इसलिए हे मनुष्य संतोष कर, क्योंकि जो तेरे माथे पर लिखा है, वह तुम्हें जरूर मिलेगा।

शब्दार्थ - चालुन = बरदाशत, सहना, मन्दन्यन = दोपहर, गटकार = अन्धकार, ग्रटै = चक्की।

तिम छिनअ मनुष्य तिम छिय रेश
यिमन दिह मन निश गव
बडित तअ बूडित ब्याख क्याह रछे
फुटमितिस बानस पेयि ग्यव

अर्थ - वह मनुष्य नहीं वह ऋषि है जिन्होंने मन से शरीर को भुला दिया है। बड़ा और बूढ़ा होकर दूसरा तुम्हारी रक्षा कैसे कर सकता है। जैसे टूटे हुए बर्तन में घी ठहर नहीं सकता।

शब्दार्थ - रेशॅ = ऋषि, दिह = शरीर, रछे = रक्षा, फुटमितिस = टूटा हुआ, बानस = बर्तन।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

टयोठ मदुर तय म्यूठ ज़हर
यस युथ च़अ क्नख जान भाव
यिम यथ क्रि कल त कहर
सु तथ शहर वॉतिथ प्यव

अर्थ - कड़वा मीठा है और मीठा कड़वा। जिसने जिसकी इच्छा की और उसी पर कायम रहा। वही उस शहर को पहुंच गया।

शब्दार्थ - टयोठ = कड़वा, म्यूठ = मीठा।

च़रमुन चटिथ दयुतुय पोनॅ पानस
त्युथ क्याह वोवुथ तअ फोली सुई
मूढ़स उपदेश गयि रीन्ज दुमटस
कन्य दानदस गौर आपरित रोव

अर्थ - तुमने अपनी चमड़ी काटकर अपने लिए कील गाड दी। ऐसा तुमने क्या बीज बोया, जिसका फल तुम्हें मिलेगा। मूर्ख को नसीहत करनी ऐसी है जैसे गुम्बद पर बान्टे फेंकने हैं। वह ऐसे ही ज़ाया होंगे। जैसे कि पत्थर के बैल को गुड़ खिलाना है।

शब्दार्थ - चरमुन = चमड़ी, मूढ़स = मूर्ख, दानदस = बैल, गौर = गुड़।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

चामर, छत्तर, रुत सिंहासन
शाद, नाटय रस, तोलअ परयाक
क्याह मॉनित यति स्थिर आसवुन
कक्ह जन कासी मरन्यन शेन्ख।

अर्थ - चामर, छत्र, रथ, सिंहासन, इनकी खुशी, नाटय रस, नरम बिसतरा, इनमें कोई भी इस संसार में पायदार नही, इसलिए इनसे तुम्हारे मरने का खौफ कैसे चला जाएगा।

शब्दार्थ - रुत = रथ, शाद = खुशी, शेन्ख = खौफ, तोलअ परयाक = नरम बिस्तरा।

च्यत अमर प्यठ थवज़े
त त्राविथ लगि जोर
तति तिनो शुन्युक जे सोन्दर ज़े
वदि शुर तअ कोछिनो मूरे

अर्थ - अपने चित को अमर ईश्वर पर लगाना चाहिए। अगर तुमने सच्चे रास्ते को छोड़ दिया तो तुम्हारे विचार शून्य की तरफ लग जाएंगे। वहां पर शक नहीं करना चाहिए। विचार उस दूध पीते बालक की तरह है जोकि मां की गोद में चंचल रहता है।

शब्दार्थ - च्यत = हृदय, चित, तिनो = विचार, शुर = बच्चा, कोछिनो = माँ की गोद, मूर = रहता है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

छुई कुनि छुई ना कुन्ये
वुछुम और योर ना कुन्ये
दय फोल तै मोल ना कुन्ये
छुई च़्छारून तअ गारून ना कुन्ये

अर्थ - वह (ईश्वर) कहीं है और कहीं नहीं भी है। मैंने उसको इधर-उधर कही नहीं पाया। यह कुदरत (ईश्वर) का फल है इसका कोई मोल नहीं। इसकी तलाश करने की इधर-उधर आवश्यकता नहीं है। वह हर जगह विधिमान है।

शब्दार्थ - फोल = फल, मोल = मूल्य, च्छारून = तलाश, कुनि = कही, कुन्ये = कहीं नहीं, वुछुम = देखा, दय = ईश्वर, गारून = इधर-उधर।

ज्ञानुक अम्बर पोरूत तते
यिम पद ललि दपॅ तिम हृदय अनुक
कारण परनाविक लय कर ललें
चित ज्योति कासन मरनन शेन्ख

अर्थ - अपने आपको ज्ञान रूपी कपड़े पहना कर उन वाक्यों पर ध्यान दे। जो लल ने कहे हैं। ऊं के दिल में ध ारण करने से लल ने अपने चित रूपी ज्योति में लय किया। तभी तो ऐसा करने से मरने का भय दूर हुआ।

शब्दार्थ - अम्बर = कपडे, पोरूत = पहनना, शेन्ख = डर, भय।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सोदरस नो लबी साहिल
न तथ सुम न तथ तार
पर कर पैदा परवाज़ तुल
वुनि छस सुल तअ छाडुन यार

अर्थ - समुन्द्र का किनारा पाना मुशकिल है, जिस पर न कोई पुल है न कोई पार जाने का रास्ता। तू पंख पैदा कर जिससे तुम उड़ान भर सको। अभी सवेरा है, तू अपने ईश्वर को तलाश कर।

शब्दार्थ - सोदरस = समुन्द्र, साहिल = किनारा, सुम = रास्ता, तार = पुल, पर = पंख, परवाज = उड़ान, यार = ईश्वर।

तलअ छुई ज्युस प्यठ छुख नचान
वन्तअ मालि मन किथअ प्रचान छुई
सोरई सोम्बरिथ यती छय मोचान
वन्तअ मालि अन्न किथअ रोचान छुई

अर्थ - तुम्हारे नीचे एक गहरी खाई है और तुम उसके ऊपर नाचते हो। हे मनुष्य यह देखकर भी तुम्हारा मन यह कैसे बरदाशत करता है। सब कुछ हासिल किया हुआ यहीं पर छोड़ना है। हे मनुष्य यह देखकर भी तुमसे यह रोटी कैसे खाई जाती है।

शब्दार्थ - ज्युस = खाई, नचान = नाचना, प्रचान = बरदाशत, मालि = मनुष्य, मोचान = छोडना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तनअ मनअ गयस बअ तस कुन्ई,
बूजुम सतुक घंटा वज़ान,
तथ जायि धारनायि धारना दिचम्,
आकाश तथ प्रकाश कोरुम सर

अर्थ - मैं तन मन से उसकी (ईश्वर) तरफ लगी रही। मैंने सच्चाई की घडिया बजते सुनी। मैंने उसी जगह तपस्या की। तब मैंने आकाश और प्रकाश पा लिया।

शब्दार्थ - सतुक = सच्चाई, वज़ाप = बचना, धारनायि = तपस्या, जायि = जगह, धार यि धारना = ईश्वर की तपस्या, सर = पालेना।

त्यम्बर पेयस कवअनो चॉजिन,
मस रस कवह अनहाजंन गोस,
शान्तन हंज क्रय तोल मोल वॉजिन,
अनरिम् गाह यलि न्यबर प्योय

अर्थ - एक चिंगारी जो उस नर पड़ी तो उसने क्यों बरदाशत नही की। मघ उसकी नाडियों में क्यों चला गया उसने साधुओं की क्रिया का वज़न और कमित घट दिया। जबकि उसके अन्दर का प्रकाश बाहर निकला।

शब्दार्थ - त्यम्बर = चिंगारी, शान्तन = साधुओं, गाह = प्रकाश, चॉजिन = बरदाशत करना, कवओ = क्यों नही।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

परुन सुलभ पालुन दुलर्भ,
सहज गारुन सूक्षम् त क्रूठ,
अभयासके गन्यरह शास्त्र मोठुम्,
चेतन आनन्द निश्चय गोम

अर्थ - पढ़ना आसान है मगर उस पर अमल करना मुशकिल है। सच्चाई और असलियत की तलाश करना बहुत ही सूक्षम और मुशकिल है बहुत अभ्यास करने से मैं शास्त्र भूल गई। तब मुझे सच्ची खुशी का निश्चय हुआ।

शब्दार्थ - क्रूठ = मुशकिल, मोठुम = भूलना, पालुन = अपनाना, अमल करना, सहज= सच्चाई, गारुन = तलाश, गोम = होना।

परिथ तअ बूज़िय ब्रह्ममण छेटन,
आगरअ खटने तिहन्दी वेदंअ सात,
पटनच सन दिथ थावन मटटन्,
मोहित मन गच्छेक अहंकारी

अर्थ - पढ़कर और सुनकर ब्रहमण भ्रष्ट हो जाएंगे। उनके वेद पढ़ने से नदियों का स्रोत सूख जाएंगा। वह पटन का माल चुरा कर मटन पहुँचा देगें। नीच काम करके वह अंहकारी हो जाएंगे।

शब्दार्थ - पटनच = पटन (जगह का नाम), मटटन = मटन, छेटन = भ्रष्ट, झूठे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

पोरुम पोलुम अपरोई परुम,
केसरि वन वोलुम रटिथ शाल,
परनस परनुम् तअ पानस पोलुम,
अदअ गव मोलूम् तअ जोनिम हाल

अर्थ - जो मैंने पढ़ा उसी पर अमल किया जो मैंने नही पढ़ा था वह भी पढ़ा मन रुपी शेर को मैंने इच्छा रुपी जंगल से निकाल कर एक गोदड़ बना दिया (वश में कर लिया) दूसरो को उपदेश दिया और स्वयं उस पर अमल किया, तब मुझे असलियत मालूम हुई, और मैदान जीत लिया (अर्थात कामयाबी पा ली।)

शब्दार्थ - पोरुम = पढ़ा हुआ, पोलुम = अमल करना, केसरि = शेर, शाल = गीदड़, जोनिम = असलियत।

परनविनो लुकन छुख परनान,
पानस छुई न गच्छान कनन,
यिथ पॉठय पुज छुई नाटअॅ कनान,
पानस नअ पोशान पकमोंडय त कन्

अर्थ - ऐ पुजारी तू लोगो को पढ़ाता है लेकिन स्वयं तुम पर कांई प्रभाव नही पड़ता। जिस तरह कसाई मांस बेचता हैं और अपने लिए टांगे और कान तक नही बचते है।

शब्दार्थ - पुज = कसाई, नाटअ = मॉस, पकमोंडय = टांगे, कन् = कान, कनन् = कानो, प्रभाव पड़ना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

परान परान ज़्यव ताल फोजिम
चे योग्य क्रय तजम् नअ जांह
सुमरन फेरान न्यठ अंगुज गजम
मनच दई मालि चजिम नअ जांह

अर्थ – पढ़ते-पढ़ते मेरी जुबान और तालू गिस गए मगर तुम्हारे लायक मुझ से कोई क्रिया नहीं हो सकी माला फिरते-फिरते मेरा अगूँठा और उंगली घिस गई लेकिन मेरे मन का मैल कभी दूर नहीं हुआ।

शब्दार्थ – ज़्यव = जीभ, ताल = तालू, न्यठ = अंगूठा, अंगुज = उंगली, फोजिम = घिसना।

जुवस दोद तय दादिस सवरै
सकरय करख तअ मरख न जांह
सक्रय नय करख आम डाम्ब करख
बडी दोदॅ तअ बलख न जांह

अर्थ – शरीर के साथ बीमारी है। बीमारी में परहेज करना लाज़मी है अगर परहेज किया तो कभी नहीं मरोगे। अगर ना परहेजी की और लापरवाह रहे तो बीमारी बढ़ेगी और कभी भी स्वस्थ ठीक नहीं होगा।

शब्दार्थ – जुवस = शरीर, सवरै = परहेज, आम-डाम्ब = लापरवाही, दोद = बीमारी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ज़ान्हा नाडी दल रटिथ
चटिथ वटिथ कोटित क्लेश
जांन्हा अदअ रस त रसायन गटिथ
शिव छुय क्रूठ ते च्येय उपदेश

अर्थ - काश मैं नाड़ी दल को मन में काबू करना जानती, तब मैं क्लेश को काटती, बांधती और दबाती। और मैं रस व रसायन को भी जानती, शिव का पाना मुशकिल है इस उपदेश को अच्छी तरह से जानो।

शब्दार्थ - वटिथ = बाँदना, कोटिथ = दबाना, क्रठ = मुशकिल।

जन्म् प्राविथ वैभव नो छोन्डुम
लूबुन, भूगुन, हरम् न परै
सोमई आहार स्यठाह जोनुम्
चोलुम, दोखवाव पोलुम् दय

अर्थ - जन्म पाकर मैंने ऐश्वर्य की कामना नहीं की। लालच और ऐश व अशरत की चाहत नहीं की। थोड़ा सा खाना भी काफी समझा मैंने दुख दर्द और निर्धनता सहन की। और ईश्वर की पूजा करती रही।

शब्दार्थ - सोमई = थोड़ा सा, स्यठाह = काफी, वाव = निर्धनता, दय = ईश्वर।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शिव शिव करान हमसअ गथ सरिथ
रूजिथ व्यवहॉरी दयन क्यहो रोत
लागि रोस अवै युस मन करि तअ
तस नित परसन सोरगरूनाथ

अर्थ - शिव का नाम ज़बान पर लाना राजा हम्स के रास्ते को याद रखना। दिन और रात गृहस्थ आश्रम का विधि पूर्वक पालन करना। अपने मन से दवेश का भाव मिटाना, निष्काम कर्म करना ही शिव जी को खुश करना है।

शब्दार्थ - गथ = रास्ता, सरिथ = याद, दयन = दिन, क्यहो = और, व्यवाहॉरी = गृहस्थ आश्रम का पालन करना, परसन = खुश, प्रसन्न।

शिव छुय जाव्युल जाल वाहराविथ
कर ज़नन मन्ज छुई तारिथकथ
जिन्दह नय वुछ़हन अदअ कति मरिथ
पानअ मंज़ पान कड व्यचारिथ कथ

अर्थ - शिव एक मांया जाल फैलाकर बैठा है, उसी जाल में सब प्राणी फंसे हुए हैं। अगर तुमने शिव को देखने की तलाश नहीं की तो तू कब मरेगा इसलिए शिव के साथ आत्म स्वरूप को जान ले।

शब्दार्थ - जाव्युल = माया, वाहराविथ = फैलाकर।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

चई दिवअ गरतस तअ दहरथन सज़क
चई दिवअ दयुतुथ क्रजन प्राण
चई दिवअ ठन्य रोस वज़रव
कुस ज़ानि चोनई परमान

अर्थ - हे ईश्वर! तू हर किसी जगह और सारे संसार में व्याप्त है तूने ही सब शरीर धारियों को प्राण दिये। तू बजने के बगैर ही बजता है। तुम्हारा प्रमाण कौन जान सकता है।

शब्दार्थ - ठन्य = बजना (आवाज), वज़ख = बजता, परमान = प्रमाण, चई = हे, दिवअ = ईश्वर, सज़क = व्याप्त, क्रंजन = कंकाल।

पर पर करान ज़ल हो मन्दान
बडयोख तिमन्ई अहम भाव
शास्त्र परान हीथा लबान
शास्त्र पोरूम् तअ परान छस

अर्थ - ऐसे पढ़ते रहे जैसे जल को मंथना है। अर्थात् पानी मथने से कोई फाइदा नहीं होता है। शास्त्र को पढ़ने वाले दिखावा करते है। मैंने भी शास्त्र पढ़ा और अब भी पढ़ती रहती हूँ।

शब्दार्थ - मन्दान = मंथना, हीथा = दिखावा, पर पर = पढ़ते-पढ़ते, पोरूम = पढ़ा, परान = पढ़ती।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नाबद बोरस अट गन्ड डयोल गोम
दयन होल गोम हयक्ह क्यहो
गोरअ सुन्द वनुन रावुन त्याल गोम
पहलि रोस खयोल गोम हय कह क्यहो

अर्थ - मिश्री के भोज का गांठ मेरे कन्धे पर ढ़ीला पड़ गया। दिन का काम मेरे लिए उल्टा हो गया। तो मैं कैसे कामयाब हो सकूँ। गुरू के शब्द मेरे लिए विष बराबर हो गए। मेरा खेड़ बगैर गड़रिया के जैसा हो गया। मैं कैसे कामयाब हो सकूँगी।

शब्दार्थ - गन्ड = गांठ, होल = उल्टा, गोरअ = गुरू, पहलि = गडरिया, नाबद = मिश्री।

नफसई म्योन छुय मदहोस्तई
आम होस मंगनम् गरि गरि बल
लछम मन्ज़ सास मन्ज़ अखा लूसई
नतअ हेंतनम सारी ताल

अर्थ - मेरा नफस एक हाथी के मानिन्द है, जो हाथी मुझ से हर समय बल (भोजन) मांगता है। लाखों हज़ारों में से कोई एक बचता है। वरना यह हाथी हर एक को अपने पांव के नीचे कुचल डालता है।

शब्दार्थ - होंस = हाथी, मदहोस्तई = हाथी के मानिन्द (समान), लछम = लाख, सास = हजार।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नाथो बअ नो रानी मंग्य
मेय रावनुन राज करयम क्याह
यि गोम लीखित तिमा हरयम्
हरयम हरयम तअ हरयम् क्याह

अर्थ - हे ईश्वर मैं रानी नहीं बनना चाहती हूँ। रावण का राज मुझे क्या करेगा। जो मेरे माथे पर लिखा है, वह कोई नहीं मिटा सकता है। चला जाएगा, चला जाएगा। मेरे से क्या चला जाएगा।

शब्दार्थ - नाथो = ईश्वर, मंग्य = बनना, रावनुन = रावण।

नियम करूत गरबा
चेतस करबा पेयी
मरनअ ब्रोठई मरबा
मरिथ ति मरतबअ हुरी

अर्थ - जब तुम अपनी मां के गर्भ में थे तब तुम ने एक वादा किया। वह वादा कब याद आएगा। तुम्हें मरने से पहले ही मरना चाहिए। फिर जब तुम्हारी मौत का दिन आएगा, तब तुम्हारा मरतबा बहुत बुलंनद होगा।

शब्दार्थ - ब्रोठई = पहले ही, मरतबअ = अहमियत, हुरी = बढ़ना, बुलन्द होना, गरबा = गर्भ, चेतस = याद करना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लोलकि नारह यलि लोल लल नोवम्
मरनय मोयस तअ रूज़स न ज़रय
रंग रोस ज़ाच क्याह न रंग होवुम
बो दपुन च़ोलुम क्याह सन करय

अर्थ - मुझ लल ने प्रेम रूपी अग्नि को अपने हृदय में सहन किया, मरने से पहले ही मैं मर गई। बुढ़ापा नहीं देखा। अपनी बेरंग जात पर मैंने क्या रंग नहीं दिखाए। ''मैं सब कुछ हूं'' यह सब भूल गई।

शब्दार्थ - नारह = आग, नावम् = सहन करना, लोल = प्रेम, ज़रय = बुढ़ापा।

ल्यखा थोखा प्यठ शेरि हटचम
निन्दया सपनम् पतअ ब्रोंठ ताम
लल छस कल ज़ोंहनो च्छेन्यम
अदह यलि सपन्स व्यपिहे क्यांह

अर्थ - मैंने गालियां और लोगों से थूकना अपने सर पर लेना बर्दाशत किया। शुरू से लेकर अन्त तक मैं बदनाम हुई। मैं लल हूँ और इच्छाएं कभी भी मेरे से दूर नहीं हुई। अन्त में जब मैं पूरी हुई तब मुझ में कुछ नहीं समा सका।

शब्दार्थ - ल्यखा = गाली, थोखा = थूकना, शेरि = सिर, च्छेन्यम = दूर हुई, कट गई, व्यपिहे = समाना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

गाफिला हयकखई कदम तल,
होशियार रोज़ तअ त्रावे प्यॉदिल
त्रावख नय तअ छुख जाहिल
वुनि छस सुल तय छ़ान्डुन यार

अर्थ - भूले भटके मुसाफिर अगर हो सके तो तेरे कदम से चलने चाहिए और दिल से बुरे विचार निकाल दे। अगर ऐसा नहीं करेगा तो तुम बड़े मूर्ख हो। इसलिए अभी सवेरा है तू अपने परमेश्वर की तलाश कर।

शब्दार्थ - गाफिला = भूले भटके मुसाफिर, त्रावख = छोड़ना, निकालना, जाहिल = मूर्ख, सुल = सवेरा, देरी न हुई, यार = परमेश्वर।

मूड़ो क्रय छय न धारून तअ पारून
मूडो क्रय छय न रच्छनी काय
मूडो क्रय छय न देह सन्दारून
सहज व्यचारून छुय वपदेश

अर्थ - ऐ मूर्ख कर्म करना अपने देह को संवारना और इस काया की रखवाली करना और सुन्दर बनने से ईश्वर नहीं मिलता। ईश्वर को पाने के लिए उसको समझना जरूरी है।

शब्दार्थ - मूडो = मूर्ख, क्रय = कर्म, रच्छनी = रखवाली, क्रय = कर्म, काय = काया, रच्छनी = रखवाली।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शुन्युक मैदान कोडुम पानस
में ललि रूदुम न बोद्ध न होश
बिज़ी सपन्स पानी पानस
अदअ कमि सर फोलय ललि पम्पोश

अर्थ - मैंने शून्य के मैदान में सफर किया। मुझ लल का न ही होश था न ही अक्ल ठिकाने रही। मुझ में स्वयं ही आत्मज्ञान प्राप्त हुआ। तब मेरे ज्ञान रूपी ऐसा खिला जैसे कीचड़ में कमल का फूल खिलता है।

शब्दार्थ - शुन्युक = शून्य, कमि = कीचड़, फोलय = खिलना, कोडुम = सफर।

वुछान तिबअ छस सॉरसी अन्दर
वुछुम प्रज़लान सॉरसी मन्ज़
बूजिथ त रूजिथ वुछ हरस
घरअ छु तसुन्दई बअ कोस लल

अर्थ - मैंने देखा और हर एक को अपने अन्दर पाया। मैंने ईश्वर स्वरूप को भी हर एक के अन्दर प्रकाशमान देखा। सुनकर, ठहर कर उस ईश्वर का दर्शन किया। यह उसी का घर है मैं कौन लल हूँ।

शब्दार्थ - सारसी = सब में, हरस = ईश्वर, बूजिथ = सुनकर, रूजिथ = ठहरकर।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

न प्यायस तअ न जायस
न खेयम हन्द तअ न शोंठ
शन छस पतअ तय
सतन छस ब्रोंठ

अर्थ - मैंने न किसी बच्चे को जन्म दिया। ना ही मैं खुद पैदा हुई। मैंने हन्द और सोंठ नहीं खाई। मैं छः के पीछे हूँ और सात के आगे हूँ।

शब्दार्थ - प्यायस = बच्चे को जन्म देना, जायस = पैदा होना, खैयम = खाई।

आमि पनअ सोदरस नाव छस लम्मान
कति बोजि दय म्योन मेति दी तार
आम्यन टाक्यन पोन्य जन शमान
मन छुम ब्रमान धरअ गच्छहा।

अर्थ - कच्चे धागे से अपनी नाव को समुन्द्र पार ले जाने के लिए खींच रही हूँ। कब मेरे ईश्वर सुनेगा और मुझे उस पार लगा देगा। यह ऐसा ही है जैसे कच्चे बर्तनों में पानी नहीं ठहरता। मेरा मन असली घर जाने के लिए भ्रमित है।

शब्दार्थ - आमि = कच्चा, पनअ = धागा, सोदरस = सागर, टाक्यन = मिट्टी का बर्तन, शमान = गिरना (ठहरना), पोन्य = पानी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

असी आस्य तअ असी आसव
असी दौर कोर पत वथ
शिवस सोरि नअ ज़्योन तअ मरून
रवस सोरि न अत गथ

अर्थ - हम ही थे और हम ही रहेंगे। हमने ही आगे पीछे यहां राज्य किया। जैसे शिव न कभी जन्म लेता है न कभी मृत्यु पाता है। इसी तरह सूर्य का आना जाना भी चलता रहता है।

शब्दार्थ - दौर = राज्य करना, रवस = सूर्य, ज्योन = जन्म, मरून = मरना।

गोरन दोपनम कुन्ई वचुन
न्यबरअ दोपनम् अन्दर अचुन
सुय्य मे ललि गव वाक त वचुन
तव्य हयोतुम नन्नौ नचुन

अर्थ - गुरू ने मुझे एक ही उपदेश दिया कि बाहर से अन्दर जाओ। वही मेरे लिए नियम और उपदेश बना, तब से मैं नंगी होकर नाचने लगी।

शब्दार्थ - कुन्ई = एक, वचुन = उपदेश, नचुन = नाचना, न्यबरअ = बाहर से।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तन्त्र गलि तय मन्त्र मोचे़
मन्त्र गोल तय मोचयि च़्यथ
च़्यथ गोल तय केन्हना कुने
शिन्यस शिन्या मीलिथ गव

अर्थ - तन्त्र पिगल मन्त्र मे समा गया। मन्त्र पिगल गया तो बाकी चित रह गया। चित पिगला तो कोई नही कहीं पर है। ऐसे शून्य से शून्य मिल गया।

शब्दार्थ - गलि = पिगलना, च़्यथ = चित, मोचे़ = सिमटना।

केन्व़न दयुतथम ओरय आलव
केन्व़व रोट नालै व्यथ
केन्चन मस चथ अच्छ लजितालव
केन्चन पपिथ गई हालव ख्यथ।

अर्थ - कई लोगों को ईश्वर स्वयम बुलाता है अर्थात् अपना अनुग्रह करता है। कई लोगों ने वितस्ता नदी का सारा पानी पिया। कई मदमस्त होकर छत की तरफ देखते है। कई लोगों की फसल पककर टिडी दल ने खा ली।

शब्दार्थ - व्यथ = वितस्ता नदी, हालव = एक कीड़ा जो पकी फसल खाता है (टिडी), अच्छ = आँखें, तालव = छत, केन्वन = कई लोग।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बबरि लंगस मुशकनो मूरे
हून्य बसति कोफूर नेरि नअ ज़हि
मन बोद्ध गारून फेरी ज़ेरे
नतअ शाल टुगे नयेरी क्याह

अर्थ - बबर (एक प्रकार का सुगन्दित पौधा) की टहनी से खुशबू नहीं जाएगी। कुत्ते की चमड़ी से काफूर कभी नहीं निकलेगा। अगर तुम मन को उसी ईश्वर की तरफ लगाआगे तो वह आसानी से तेरे तरफ आएगा। वरना गीदड़ के चिल्लाने जैसे से कुछ नहीं मिलेगा।

शब्दार्थ - मुशकनो = सुगन्द, हून्य = कुत्ता, शाल = गीदड़, टुंगे = चिल्लाना।

कुस डिंगअ त कुस जागि
कुस सर्वत्र तैली
कुस हरस पूजि लागअ
कुस परम पद मेयली

अर्थ - वह कौन है जो सोता है, वह कौन है जो जागता है। वह कौन सा झील है जो बहता रहता है। वह कौन सी वस्तु है जो शिव की पूजा में लगाई जाए। वह कौन सा स्थान है जिस को तुम प्राप्त करोगे।

शब्दार्थ - डिंगअ = सोना, कुस सर्वत्र = कौन सा झील, तैली = बहना, मेयली = प्राप्त करना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

हा चितअ कवअ छुई लोगमुत परमस
कवय गोय अपजिस पज़्युक पर धमर्स
दिशअ बोज़ वश करनुक पर धमर्स
दिनअ गच्छनअ ज़्यन मरनस क्रोत

अर्थ – हे मन तुझे दूसरों का नशा क्यों लगा है। तुम ने झूठ को सच क्यों समझा। तुम्हारी नादानी से तुम्हें पर ध र्म का मोह हुआ। तुम्हारा जीना और मरना हमेशा जारी रहेगा।

शब्दार्थ – कवअ = क्यों, चितअ = मन, अपजिस = झूठ, पज्युक = सच।

मन डिन्ग तअ अकोल ज़ागि
डेड़ सर पांचा अन्दर वतरह तेली
सुविचार पोनह हरस पूज़ि लागअ
परम पद शिव मेली

अर्थ – मन सोया रहता है और जब कि यह मन "कौल" से नीचे आता है तो जागता है पांच इन्द्रिय। एक झील की भान्ति है जो हर समय बहता रहता है। वह पवित्र वस्तु जो शिव की पूजा में लाई जाए वह अपने आत्मा का विचार है वह उच्च स्थान जिस को तुम हासिल करोगे। शिव स्वरूप का दर्शन है।

शब्दार्थ – डिन्ग = सोया, सर = झील, पाँचा = पाँच, परम = उच्च, पद = स्थान।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

गोरस प्रच्छयोम सासि लटे
यस न केन्ह वनान तस क्या नाव
प्रच्छान प्रच्छान थचिस त लूसस
केन्हनस निश क्याह तान द्राव

अर्थ - अपने गुरू को मैंने हज़ार बार पूछा जिसका कोई नाम नहीं उसका नाम क्या है, अर्थात् ईश्वर को पाने का क्या रास्ता है। पूछते पूछते मैं थकहार गई, मगर कुछ में से कुछ तो निकला।

शब्दार्थ - लूसस = थकना, नाव = नाम, गोरस = गुरू, प्रच्छान = पूछना, सासि = हज़ार बार।

सोन द्राव दहनअ मल गव दज़िथ
यलि में अनिलि दयतमस ताव
कत्तर जन गयस लोलअ व्यगालिथ
यलि कंठकोश चोलनिश रव द्राव

अर्थ - सोना भठी से निकला और उसका सब मैल जल गया। जब मैंने इसको आग लगाई। मैं उसके प्रेम में बर्फ की तरह पिगल गई और शीत सूर्य के निकलते ही भाग गया।

शब्दार्थ - दजिथ = जलना, अनिलि = आग, व्यगलिथ = पिगलना, रव = सूर्य, कत्तर = जमा हुआ बर्फ, कठकोश = सरदी, ठंड, चाल = भागना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

रव्यथ ति मूदिय न ख्यथ ति मूदिय
अदजन गोंडनक क्रोधी नार
यिम हो मालि हन्द वोललहारवस प्यठ रूदी
तिम् हो मालि अदअ मूदय न जांह।

अर्थ - खाकर भी मर गए, न खाकर भी मर गए। तब वह क्रोध की अग्नि में जल गए। जो केवल कासनी और उपल्ल साग (दोनों जंगली जड़ी बूटियाँ हैं) खाकर जिन्दा रहते हैं वह मनुष्य कभी भी नहीं मरते हैं अर्थात् दुःखी नहीं होते।

शब्दार्थ - ख्यथ = खाकर, मूदिय = मरना, नार = आग, क्रोधी = क्रोध, गुस्सा, जांह = कभी भी।

सोचस्स न सातस पचस न रूमस,
सुमस मे ललि चव पुननई वाख,
अन्दरियम गटकार रोटुम त वोलुम,
चटिथ तअ दयुतमस् तती चाख

अर्थ - मैंने एक पल भर भी आशा धारण नहीं की, न ही मैंने तिलभर का भरोसा किया मैंने अपने ही वाक्य रूपी नशा पी लिया। जिससे कि मैंने अन्दर के अज्ञान को पकड़ लिया और अपने अन्दर के अन्धकार को दूर किया। अर्थात् अज्ञान से ज्ञान प्राप्त किया।

शब्दार्थ - गरकार = अन्धकार, पचस = भरोसा, चव = पीना, वाख = वाक्य।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ललि गोर ब्रहमाडं प्यठ कुन वुछुम,
शशकल वाचम पादन तल,
ज्ञान अमृत प्रकृत भरम,
लभई मोरूम् अन्द वन्द तान्य।

अर्थ - मुझ लल ने गुरु को ब्रहमांड के ऊपर देखा, सच्चे ज्ञान का प्रकाश मेरे पांव तक पहुन्चा मैंने अपनी बुद्धि को ज्ञान रूपी अमृत से भर दिया और पूरी तरह से मैंने लालच को भी छोड़ दिया।

शब्दार्थ - शशकल = सच्चा ज्ञान, प्रकाश, पादन = पांव, लभई = लोभ, लालच, प्यठ = ऊपर, मोरुम = मारना, छोड़ देना।

लल, बो द्रायस कपसि पोश सची,
काडय तअ वोवुन करनम यचई लथ,
तेह दलि खारनम् जावजि तां वही,
वोवर वानअ गयम् अलहोजी लथ।

अर्थ - मैं लल इस संसार में ऐसी आई जैसे कपास के डोडे से फूल बेलने और पेचने ने मुझे बहुत पामाल किया। वुनकी के डोर के जरिए बारीक बारीक रेशों में अलग-अलग किया। इसे के जुलाहे ने मुझे ओंधे लटका दिया।

शब्दार्थ - कपसि = कपास, पोश = फूल, वोवर = जुलाहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लतन हुन्द माज़ लारयोम वतन,
अकई होवनम अवची वथ,
यिम यिम बोजन तिम कोनअ मतन,
लल बोज शतन कुनी वथ।

अर्थ - मेरे पैरों का मांस सड़कों में चिमट गया, अर्थात् मुझे तीर्थों को फिरते-फिरते परमेश्वर की तलाश में पैरों की चमड़ी भी घिस गई। अंत में मुझे ऊं ने ही उस परमेश्वर का रास्ता दिखाया। जो मनुष्य भी यह बात सुनेगा। वह क्यों न उसके प्रेम का दीवाना बनेगा। लल ने सैकड़ों के बदले केवल एक ऊँ पर ध्यान दिया।

शब्दार्थ - लतन = पैरों, माज़ = मांस, वतन = रास्ता, लारयोम = चिमटना, शतन = सैंकड़ों।

लल बअ चायस सुमन बाग बरस,
वुछुम शिवस शक्ति मीलिथत क्याह,
लय करमस वाचस अमृत सरस,
जिन्दय मरस त में करि क्याह।

अर्थ - लल, जब मैं सुमन के बाग के दरवाजे के अन्दर गई तो मैंने शिव और शक्ति को एक होकर देखा। मैंने उसी का ध्यान किया और मैं अमृत के झील में पहुँच गई। अब मुझे जीने और मरने से कोई सरोकार नहीं।

शब्दार्थ - बरस = दरवाज़ा, सरस = झील, मीलिथत = एक होकर, सरस = झील।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लोलकि नारअ यलि लोलअ लल नोवुम,
मरनय मोयस तअ रोजस, नअ जेरे,
रंग रुचि जांच क्याह न रंग होवुंम,
बोदपुन चोलुम् क्याह सन करें।

अर्थ - मुझ लल ने प्रेम रूपी अग्नि को अपने मन में बरदाशत किया और मरने से पहले ही मर गई। बुढ़ापा नहीं देखा और अपने बेरंग जात पर मैंने क्या-क्या रंग नहीं दिखाए, मैं सब कुछ हूँ (अहभाव) सब कुछ भूल गई।

शब्दार्थ - नारअ = अग्नि, ललनोवुम = बरदाशत करना, लोलकि = प्रेम रूपी, नारअ = आग, मरनय = मरने के पहले, मोयस = मरना, जेरे = बुढ़ापा।

लल बअ द्रायस दूरे दूरे,
कुलफ थविथ वछस,
युस नोन नेरे सुय फोट क्रेरे,
रवेयतोन दीतोन यच्छस।

अर्थ - मैं लल दूर दूर तक निकली और मुंह पर ताला रखा अर्थात् मैं कुछ नहीं बोली। जो भविष्यवाणी करेगा। वह नीचे गिरेगा। अच्छा है उसको किसी यक्ष को खाने के लिए दिया जाए।

शब्दार्थ - कुलुफ = ताला, यच्छस = यक्ष, फोट = डूबना, क्रेरे = कुंऐ में गिरना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लल बअ द्रायस लो लरे,
छान्डान लूसुम दोह कवह रात,
वुछुम पंडित पननि घरे,
सुय में रोटमस निष्तर तअ साथ।

अर्थ - मैं लल इश्वर के प्रेम में दीवानी हो कर निकली और उसी की तलाश में दिन रात गुजारे आखिर में मैंने पंडित (गुरु) को अपने ही घर में पाया। जब मैंने उसको पकड़ा वही मेरे लिए शुभ ग्रह और अच्छा मूर्हत निकला।

शब्दार्थ - निष्तर = शुभ ग्रह, साथ = मूर्हत, लो = प्रेम, लरे = दीवानी, छान्डान = तलाश।

लल में दोपुख लुकअ हान्ड करनी,
तवय चजम मनय शेन्ख,
माघ नोवुम नार चोलुम,
क्रहेन्यर कोसुम मनय शेन्ख

अर्थ - मुझ लल को लोगों में बदनाम होने से मेरे मन की शंका दूर हो गई। मैंने माघ के महीने में ठंडे पानी से नहाया और आशाड़ की गर्मी भी सहन की। ऐसा करने से मेरे मन का मैल दूर हुआ।

शब्दार्थ - शेन्ख = शंका, मैल, हान्ड = बदनाम, नोवम = नहाना, साफ करना, चोलुम = सहन करना, कोसुम = दूर करना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लज कासी शीत निवारी,
त्रनं जल करि आहार,
यि कमे उपदेश कोर हे बटा,
अचेतन कठ दयुन आहार।

अर्थ - यह तुम्हारी शर्म और सर्दी को दूर करता है, यह बेचारा घास-फूस और पानी पर पलता है ऐ मूर्ख पंड़ित यह किसने तुम्हें उपदेश दिया कि एक निंजीव पत्थर के लिए एक जीता जागता भेड़ बलि दिया जाए।

शब्दार्थ - लज़ =लाज, शर्म, वटंस = पत्थर, कठ = भेड़, त्रंन = घास, फूस, बटा = पंडित, अचेतन= निंजीव।

यि यि करअ सुय अर्पन,
यि रसनअ ओच़रयम तो मन्त्र,
यि यथ लोगुम दयस परअ चई,
सुय परम शिवन मन्त्र।

अर्थ - जो-जो काम मैंने किये वह उसी परमेश्वर की पूजा है जो बात मैंने मुँह से निकाली है वह उसी का मन्त्र है। यह जानकारी मेरे शरीर के साथ ही मिलेगी। तमाम पुस्तकों का निचोड़ केवल शिव ही है।

शब्दार्थ - रसनअ = मुँह, करअ = काम।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

योत बअ गयस तति ओस सुय,
तति डयूठुम मोल सुय,
कनस व्छनिथ वोल सुय,
सुयय सु त बअ कोसअ

अर्थ - जहां-जहां मैं गई वहां वह मौजूद था। वहां मैंने पिता रूपी ईश्वर को देखा। उसके कानों में कुण्डल है वह तो वही है मैं कौन हूँ।

शब्दार्थ - डयूठुम = देखना, कोसअ = कौन, मोल = पिता (परमेश्वर), वोल = कुण्डल।

युस हा मालि हेडयम गेलयम् मसखरअ करयम,
सुहो मालि मनस खरयम नअ जांह,
शिव पनुन यलि अनुग्रह करयमं,
लुकन हुन्द हेडुन में करयम क्योह।

अर्थ - हे मनुष्य जो मुझे मखोल करे या बुरा बला कहे। उसको मैं कभी मन से नफरत नहीं करूंगी। जब शिव मुझ पर अनुग्रह करेंगे तब लोगों का मखोल मुझे करेगा क्या।

शब्दार्थ - मसखरअ = हंसी उड़ाना, मखोल करना, खरयम = नफरत, हेडयम गेलयम = बुरा-भला कहना(कुछ ऐसे शब्द जो कहना जो अच्छे न लगे)

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

यि क्याह आसिथ क्याह रंग गोम,
संग गोम चटिथ हुदहुदनि दगे,
सारनी पदन कुन्ई वखुनप्योम,
लल मेअ त्राग गोम् ललि केमि शाठे।

अर्थ - यह क्या था और मुझे क्या पेश आया। मुझे किसी नामालून दु:ख से सहारा छूट गया तमाम वाक्यों का मुझे एक ही उपदेश मिला मैं लल एक झील में पड़ी हूं और कुछ मालूम नहीं कि मैं किस किनारे पर पहुँचूंगी।

शब्दार्थ - त्राग = झील, शाठे = किनारा।

यि क्या आंसिथ यि क्युथ रंग गोम्,
बेरंग करिथ गोम लगअ कमि शाठे,
तालव राज़दानि अबक छान प्योम्,
जान गोम् जोनुम पान पन्नुई।

अर्थ- यह क्या था और मुझे यह क्या पेश आया। हर एक काम मेरे लिए उल्टा ही हुआ। मुझे कुछ समझ नहीं आता है कि मैं किस किनारे पहुन्चोंगी, छत बनाने के लिए मुझे एक अधसिखा तरखान मिला। यह भी अच्छा ही हुआ कि मैं अपने आप की खुद्ध ही पहचान बनाऊंगी।

शब्दार्थ - अबक = अधसिखा, छान = तरखान, तालव = छत।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Dantalab Jammu

मन्दछअ हांकल कर च्छेन्यम,
यलि हयडन गेलुन असुन त्रावह
योरूक जामअ करसना दज्यम्,
यलि अन्दरयुम् खारुकरोज्यम् वारह।

अर्थ - शर्म की जंज़ीर कब कटेगी जबकि मुझे लोगों का बुरा भला कहना या हंसी मखोल का बर्दाशत होना पैदा हो जाएगा। यह शर्म के कपड़े कब जलेंगे। जब कि मेरा मन रुपी सांप एक ठिकाने रहेगा।

शब्दार्थ - जामअ = कपड़ा, दज्यम = जलना, मन्दछअ = शर्म, हांकल = जंजीर, असुन = हंसना, खारुक = सांप, वारह = ठिकाने रहना, रोज्यम् = रहना।

मारुख मार भविथ काम क्रोध लोभ,
नतअ कान बरिथ मारनय कान,
म्यैनी खन दिख सुविचार शम्,
विषय तिहुन्द क्याह क्युथ जान।

अर्थ - तुम काम, क्रोध, लोभ, रूपी राक्षसों को मार दो। (इन्द्रियों को वश में कर) वरना वह तीर मारकर तुम्हें ही मार देंगे। मन में विचार करके तुम आत्म स्वरूप को पहचांनो। तुम्हें पता चलेगा कि वह कितने नापायदार हैं।

शब्दार्थ - मारुख = मारना, सुविचार = आत्म स्वरूप, खन = विचार, शम = पहचान।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मूडस पुरवनुन छुई मोयि वाल चटुन,
मूडस पुरवनुन छुई मोरअ दयन कोह,
मूडस पुरवनुन छुई सोदुर पूरुन,
मूडस परनान रावी दोह।

अर्थ - मूर्ख को नसीहत करना ऐसा ही कठिन काम है जैसे बाल की खाल उतारना। मूर्ख को नसीहत करना ऐसा है जैसे कंकरों से पहाड़ बनाना। मूर्ख को पढ़ाना ऐसा है जैसे समुन्द्र को सुखाना। दरअसल मूर्ख को नसीहत करना अपना ही समय जाया करना।

शब्दार्थ - मूडस = मूर्ख, मोरअ = कंकड़, कोह = पहाड़, सोदर = समुन्द्र, पूरून = सुखाना, पुरवनुन = पढ़ाना।

मूडह क्रय छय नअ दारुन तअ पारुन,
मूडह क्रय छय नअ दरन काह,
मूडो क्रय छय न पांन्च अगन दारुन,
सहज गारुन छुई उपदेश।

अर्थ - हे मूर्ख व्रत रखना या खाना नहीं खाना क्रिया नहीं है। एकादशी का व्रत और पांच अग्न जलाना क्रिया नहीं है। केवल परमेश्वर को तलाश करना सच्चा उपदेश है।

शब्दार्थ - मूडह = मूर्ख, क्रय = क्रिया, दरन काह = एकादशा का व्रत।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मयस हयुव न प्रकाश कुने,
पयस हयुव न तीर्थ काह,
दयस हयुव न बान्दव कुने,
भयस हयुव न सोख कांह

अर्थ - प्रभु के ज्ञान के बराबर कोई रोशनी नहीं। प्रभु की तलाश के बराबर कोई तीर्थ नहीं। प्रभु के बराबर कोई रिशतेदार नहीं। परमेश्वर के भय के बराबर कोई सुख नहीं।

शब्दार्थ - मयस = प्रभु का ज्ञान, पयस = प्रभु की तलाश, दयस = प्रभु के बराबर, भयस = भय के बराबर, सोख = सुख।

मूढ़स ज्ञानच कथ नो वनज़े,
खरस गोर दिनअ रावी दोह,
स्यकि शाठस व्योल नो ववज़े,
रावरिजन नअ कोम याजन तील

अर्थ - मूर्ख को ज्ञान की बात मत बता। गधे को गुड खिलाने से सारा दिन व्यर्थ हो जाएगा। रेतीली ज़मीन में बीज नहीं बोना और न ही भूसे की रोटयों पर तेल ज़ाया करना चाहिए।

शब्दार्थ - खरस = गधा, गोर = गुड़, स्यकि = रेत, ब्योल = बीज़, कोम = भूसा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मिथया कपट असत्य त्रोवुम्,
मनस कोरुम सुय उपदेश,
जनस अन्दर केवल जोनुम,
अनस ख्यनस कुस छुम दूश।

अर्थ - मैंने मिथया कपट और असत्य बोलना छोड़ दिया और अपने मन को यही उपदेश दिया, तमाम जीवों में मैंने परमात्मा को देखा मुझे भोजन खाने से क्या दोष है।

शब्दार्थ - मनस = ज्ञान, अनस = भोजन, दूश = दोष।

राजस भूज यम करतल तुजी,
स्वगस भूज छई तप तअ दान,
सहजस भूज येम गोरअ कथ पाज,
पापअ पुन्य छुई पननुय पान।

अर्थ - राज्य करने का अधिकार उसी को है जो तलवार चलाना जानता हो। स्वर्ग को वही पा सकता है जिसमें तप और दान करने की क्षमता हो। गुरु के उपदेश पर जो चले वही सच्चे ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है। अच्छे ओर बुरे कर्मों का फल अपने आप को ही भोगना पड़ता है।

शब्दार्थ - करतल = तलवार, पननुय = अपने आप, सहजस = सच्चा ज्ञान।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Dantelab Jammu

रावनअ मन्ज रावुन रोवुम्,
राविथ अथअ आयस भव सरय,
असान गिन्दान सहज प्रोवुम्,
दपनय कोरूम् पानस सरय

अर्थ - हानि में ही मुझे हानि हुई। भूल कर मुझे भवसर में पाया गया। हंसते खेलते मैंने शिव को पाया। बिना किसी के कहने मुझ पर स्वयं ही शिव का होना प्रकाशित हुआ।

शब्दार्थ - सहज = शिव, प्रोवुम = पाया, राविथ = घुमकर।

राज़अ हंसस आसिथ लोगुथ कोलुय,
कुस ताम चोलई क्याह ताम हय्थ,
ग्रटअ गव बन्द तअ ग्रटअ हयथ गोलई,
ग्रटअ वोल चोलई फल फोल हय्थ

अर्थ- राजा हंस होकर तुम गूंगे हो गए अर्थात् इस संसार से बेखबर रहे। कोई मनुष्य तुमसे कोई चीज लेकर भाग गया अर्थात् तुमको किसी ने धोखा दे दिया। जूंही चक्की का चलना बन्द होता है अर्थात् शरीर जीण पड़ जाता है तो दाने की नाली रुक जाती है अर्थात् प्राल्बद का अंत हो जाता है, और चक्की वाला धान लेकर भाग जाता है।

शब्दार्थ - कोलय = गूंगा, ग्रटअ = चक्की, चोलई = भागकर, गोलई = धोखा देना, भाग गया, ग्रोटवाले = चक्की वाला।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

रुत क्रूठ सोरई पज़्यम,
कनन नअ बोजुन अच्छन नअ भाव,
ओरुक दपुन यलि वोन्दअ वुज्यम्,
रत्नदीप प्रज़ल्यम् वरज़नअ वाव

अर्थ - भला या बुरा सब मुझ को सामने आए। कानों से सुनना और आंखों की दृष्टि भी जाती रही। जब मेरे मन से प्रभु की आवाज़ सुनाई देगी तब मेरे मन में ज्ञान रुपी दीया आंधी और तूफान में भी जलता रहेगा।

शब्दार्थ - क्रठ = बुरा, रुत = भला, वाव = आंधी, वुज्यम = आवाज।

रंगस मन्ज छुय ब्योन ब्योन लगुन,
सोरई चालख बरख सोख,
चरव रश तअ और गालख,
अंदअ डेन्शख शिव सुन्द मोख

अर्थ - नाटक के मंच पर जैसे भिन्न-भिन्न परिधानों में भिन्न-भिन्न शक्लें नज़र आती है उनके जानने की तलाश करा अपने आप में बरदाशत करने की शक्ति अगर बनाओगे तो तुमको आनन्द होगा। अगर तुम क्रोध, नफरत, इर्शा को काबू करोगे तब तुम्हें शिव स्वरूप के दर्शन होंगे।

शब्दार्थ - रंगस = नाटक, ब्योन = भिन्न, अलग, चालख = बरदाशत, रश = इर्शा, वैर = नफरत, डेन्शख= दर्शन।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ब्रोंह कालि आसन तिथी केरन,
टंग चूंठ पपन चेरन सात,
माजि-कोरी अथवास करिथ नेरन,
दोह दयन भरन परदयन सात्।

अर्थ - आने वाले समय में ऐसे हालात बनेंगे कि नाशपाती और सेब खोबानी के साथ ही पक जाएंगे। माँ और बेटी हाथों में हाथ डाकलकर घूमने निकलेंगे। और दिन पराए मरदों के साथ बिताएंगे।

शब्दार्थ - टंग = नाशपाती, चूंठ = सेब, चेरन = खोबानी, अथवास = हाथों में हाथ, केरन = हालात।

हचिवअ हारन्ज़य पेचि़व कान गोम्,
अबक छान प्योम् यथ राजदाने,
मन्ज बाग बाज़रस कुल्फ रोस वान गोम,
तिर्थअ रोस पान गोम् कुस मालि जानिहे।

अर्थ - लकड़ी की कमान में मुझे घास का तीर मिला। इस आलीशान मकान के लिए मुझे नातजरुबेकार तरखान मिला। मुझे बाजार के बीच में दुकान मिली जिसका कोई ताला न था। मेरा शरीर ऐसा है कि किसी तीर्थ पर स्नान नहीं किया है। है कौन जो मेरी इस बात को समझ सके।

शब्दार्थ - हचिवअ = लकड़ी, छान = तरखान, वान = दुकान।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शिव शिव करान शिव नो तोशे,
ग्यव खंड़स जालक मनस सु आसे,
ग्यव दियव देहस दहअ दोर आसे,
ग्यव नय देहस दिख दिहवर कांसे।

अर्थ - शिव शिव बोलने से शिव नहीं खुश होता है। अगर तुम्हारे मन में शिव वास करेगा, तो तुम घी की तरह चमकोगे। तुम अपने शरीर को घी दे दो जिससे तेरा शरीर बलवान बन जाए। अगर अपने शरीर को नहीं दोगे तो किसी दूसरे को दे दो।

शब्दार्थ - तोशे = प्रसन्न, खुश, ग्यव = घी, दिहवर = और किसी को देना।

गगन चई तुबल (धरती) चई,
चई देन पवन त राथ,
अंग चन्दन पोश पोन्य चई,
सोरई चई तअ लागज़ि क्याह।

अर्थ - तुम ही आकाश हो, तुम ही धरती, तुम ही रात, दिन और पवन हो, तुम ही अंग, चन्दन पुष्प और पानी हो तो तुम्हें क्या अर्पन करूँ।

शब्दार्थ - देन = दिन, राथ = रात, पोन्य = पानी, चई = तुम, लागजि = अर्पन।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

वुछान ति बअ छस सारसी अन्दर,
वुछुम प्रजलान सारसी मन्ज़,
बूजिथ तअ रुजिथ वुछ हरस,
घरंस छुई तसुन्दई बअ कोस लल।

अर्थ - मैंने देखा मै सब के अन्दर हूँ। मैंने उसकी को प्रकाशमान देखा, सुनकर, ठहरकर, उस ईश्वर का दर्शन कर। यह घर उसी का है मैं कौन लल हूँ।

शब्दार्थ - हरंस = ईश्वर, बूजिथ = सुनकर , रुजिथ = ठहरकर, तसुन्दई = उसी का, बअ = मैं, कोस =कौन।

बुथि क्याह जान छुख, वोन्दअ छुई कन्यी,
असलच कथ जाहं सनी नो,
परान लेखान वुंछ ओंगजि गजी,
अन्दरिम दोय जाह च़जी नो।

अर्थ - शक्ल सूरत तेरी अच्छी है मगर तुम्हारा दिल पत्थर के समान है। असल में बात है कि तुम असली बात समझ नहीं पाए। पढ़ते, लिखते तेरे होंठ और उंगलियां घिस गई मगर अन्दर का भेद-भाव मिट न सका।

शब्दार्थ - वोन्दअ = दिल, कन्यी = पत्थर, वुंछ = होंठ, दोय = भेदभाव।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

परस हा मालि प्रनुम तअ पानस वुन्योम्,
वनअ कस ललि छुई मे पानस राह,
वाह गोम वोन्दस में क्याह करुम,
कुन्ई आसिथ सोजुम नअ जाह।

अर्थ - दूसरों को मैंने पढ़ाया लेकिन अपने को पढ़ा न पाई। किस को कहूँ कि मुझ लल में ही दोष था। मैं पछता रही हूँ। मैंने यह क्या किया। वह एक था पर मैं जान न सकी।

शब्दार्थ - सोजुम = जानना, राह = दोष, कुन्ई = एक, जांह = कभी भी।

बअ यिम् कर्म करअ पेतरुन पानस,
अरजुन बरजुन बेयिस क्युथ योत,
अंत रागअ रसुत पशुरुन आत्मस,
अदअ योर गच्छ तअ तार छुम हयोत।

अर्थ - जैसा कर्म करूंगी वैसा ही फल मुझे मिलेगा। दूसरे को इसके करने से या नतीजे से क्या गरज है। अगर मैं अतत: सब कर्म निष्भाव से अर्पन करूंगी फिर जहां में जाऊंगी वहां मेरे लिए भलाई ही होगी।

शब्दार्थ - पेतरुन = भोगना, योत = गरज़, पुशरुन = अर्पन करना, बेयिस = दूसरे को, क्युथ = नतीजा, योत = गरज़।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

वदनअ सॉत गाश हो मरी
वदनअ मदन मेली न जांह
मन कर सफा जेरि अकि मेली
यिमव शाल टुंगव नेरी नअ केन्ह

अर्थ - रोने से तुम्हारे आँखों की रोशनी चली जाएगी। रोने से तुम्हें कभी भी ईश्वर नहीं मिलेगा। अपने मन को साफ कर फिर वह आसानी से मिल सकता है। गीदड़ की तरह चिल्लाने से कोई ईश्वर नहीं मिलता।

शब्दार्थ - मदन = ईश्वर, जेरि-अकि = आसानी से, शाल = गीदड़, टुंगव = चिल्लाने, वॅदनअ = रोने से, मरी = चली जाना, जांह = कभी भी, मेली = मिलना।

धोब्य यलि छावनस दोब कनि प्यठ
संज तअ साबन मच्छनम यचय
साचन यलि फिरनम् हनि-हनि काची
अदह ललि प्रावम में परमअ गथ

अर्थ - धोबी ने जब मुझे धोबी पत्थर पर दे पटका उसके पश्चात मेरे हर एक हिस्से को साबुन लगाकर मल-मलकर धोया। दर्जी ने जब केन्ची से कुतरकर सुई से छेद डाला, तब मैं कहीं जाके ठिकाने लगी। अर्थात् बहुत तकलीफों के पश्चात ही उस परमेश्वर को पा लिया।

शब्दार्थ - छावनस = पटकना, साचन = दर्जी, काची = केन्ची, परमअ = परमेश्वर, कनि = पत्थर, प्रावम = पाना, गथ = गति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

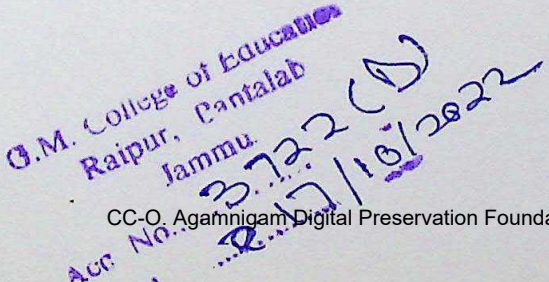

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

For Free Distribution Only
निशुल्क : प्रति
CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Printed at : Amar Art Press # 0191-2547549